Open Access

IJASSH

International Journal of Arts, Social Sciences and Humanities

(A Quarterly, Refereed, & Peer Reviewed International Journal)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://ijassh.aaassher.org/
ISSN (Online): 2584-1130
Volume 1, Issue 3, September 2023; Pages 01 – 04
DOI: 10.5281/zenodo.10226140

Original Research Article

मुगलकाल की विभिन्न अप्रचलित गायन शैलियाँ

प्रा. डॉ. रविंद्र रामभाऊ इंगळे

संगीत विभागाध्यक्ष, कै. सौ. कमलताई जामकर महिला महाविद्यालय, जिंतुर रोड, परभणी - ४३१४०१ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: ravindraingale38@gmail.com

Received: 08 June, 2023 | Accepted: 02 August, 2023 | Published: 05 August, 2023

मुगल राज–वंश का भारतीय इतिहास में बहुत बड़ा महत्त्व है। इस राज–वंश ने लगभग 200 वर्षों तक भारत में शासन किया। बाबर ने 1526 ई. में दिल्ली में मुगल–साम्राज्य की स्थापना की थी और इस वंश का अन्तिम शासक बहादुर शाह 1858 ई. में दिल्ली के सिंहासन से हटाया गया था। इस प्रकार भारतवर्ष में किसी अन्य मुस्लिम राज–वंश ने इतने अधिक दिनों तक स्वतन्त्रतापूर्वक शासन नहीं किया जितने दिनों तक मुगल राज–वंश ने किया। न केवल काल की दृष्टि से मुगल राज–वंश का भारतीय इतिहास में महत्त्व है वरन विस्तार की दृष्टि से भी बहुत बड़ा महत्त्व है। मुगल सम्राटों ने न केवल सम्पूर्ण उत्तरी–भारत पर अपना एकछत्र साम्राज्य स्थापित किया वरन दक्षिण भारत के भी एक बहुत बड़े भाग पर उन्होंने अपनी प्रभुत्व–शक्ति स्थापित की। मुगल सम्राटों ने जितने विशाल साम्राज्य पर सफ़लतापूर्वक शासन किया उतने विशाल साम्राज्य पर अन्य किसी मुस्लिम राज–वंश ने शासन नहीं किया।

शांति तथा सुव्यवस्था के दृष्टिकोण से भी मुगल राज–वंश का भारतीय इतिहास में बहुत बड़ा महत्त्व है। मुस्लमानों में उत्तराधिकार का कोई निश्चित नियम न होने के कारण सल्तनत काल से राज–वंशों का बड़ी तेज़ी से परिवर्तन होता रहा। इसका परिणाम ये होता था कि राज्य में अशान्ति तथा कुव्यवस्था फैल जाती थी और अमीरों तथा सरदारों के षड्यन्त्र निरन्तर चलते रहते थे। मुगल राज्य–काल में एक ही राज–वंश का निरंतर शासन चलता रहा। इससे राज्य को स्थायित्व प्राप्त हो गया। इसमें सन्देह नहीं कि मुगल–सम्राटों ने साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण किया और विजय यात्राएँ की परन्तु वे अपने राज्य में आन्तरिक शान्ति तथा सुव्यवस्था बनाये रखने में पूर्ण रूप से सफल सिद्ध रहे।

भारत में मुगलकाल का प्रारंभ बाबर से लेकर बहादुरशाह जफर के समय तक का है। इस प्रदीर्घ काल में ख्याल, ठुमरी, टप्पा, त्रिवट, चतुरंग आदि अनेक गायन शैलियाँ जनमानस में प्रचलित थी, जो आजभी उत्तर भारतीय संगीत में

प्रचलित है। किंतु कुछ ऐसी भी गायन शैलीयाँ उस समय प्रचार में थी जो आज हम सुन नही सकते है। अत: ऐसी ही कुछ अप्रचलित गायन शैलीयों का इस शोधपत्र में अध्ययन किया गया है।

१. **कौल:** मुगल काल में कौल फारसी सूफी परंपरा की एक जानी पहचानी गायन शैली रही है। हिंदी में कौल का अर्थ प्रवचन या वचन से माना जा सकता है। इसमें पैगंबर इस्लाम के कहे गये वचनों को अर्थात कौल को सम्मिलित करके बार बार गाया जाता है। कौल गायन विदया के आविष्कारक हजरत अमीर खुस्रो थे, जिसमें उन्होने अरबी और फारसी शब्दों के साथ साथ तराना के बोलों का प्रयोग किया।

२. **कल्वाना:** कल्बाना में आरबी और फारसी शब्दों के साथ साथ हिंदी शब्दों का भी प्रयोग किया जाता था। कौल में आरंभ से अंत तक एकही ताल निश्चित रहती थी जबके कल्वाना में ताल बदला जाता था।

३. **किल्लाना:** किल्लाना भी तराने के भांती मुगल काल में गायन का एक प्रकार माना जाता था। यह भी तराने के भाँती निरर्थक शब्दों का प्रयोग कर गाया जाता था। तराने में सभी प्रकार के शब्द प्रयोग में लाये जाते थे तो किल्लाने में सिर्फ दे रे ता ना शब्दही प्रयोग में लाये जाते थे।

४. **नख्श गुल:** जिस गीत में फारसी भाषा की एक पंक्ती हो, उसे नख्श तथा जिसमें फारसी भाषा की रुबाई हो उसे नख्श गुल कहते थे। यह शैली ऋतु प्रधान है। इसे वसंत ऋतु में वसंत राग में गाया जाता था। इसलिये उसमें फारसी भाषा में प्रकृती, फुल, बाग बगिचे आदि का वर्णन मिलता था।

५. **निगार:** फकीरुल्ला के अनुसार इस शैली का मूल प्राचीन हिंदुस्थानी शैली स्वरद्रुतनी है। निगार में फारसी की दो पंक्ति अथवा रुबाई होती है। प्रथम पंक्ती को स्थाई और दुसरे पंक्तिको अंतरा कहते है। यह भी ऋतु प्रधान गीत प्रकार है। वह मल्हार राग में गाया जाता है जिसमें वर्षा ऋतु का वर्णन होता।

६. **बसीत:** इस शैली की उत्पत्ती छंद से मानी जाती है। इस शैली में कई रागों का मिश्रण किया जाता है। इसके प्राय: चार चरण होते है। प्रत्येक चरण में भिन्न भिन्न रागों का प्रयोग किया जाता है। संभवत: हमारी रागमाला की तरह होता है।

७. **सोहेला:** सोहेला विवाह, वर्षगांठ आदि के अवसर पर नारीयाँ गाती है। इन गायिकाओं को दफजल कहते है। ये गायिकाएं किसी समय केवल महिलाओं के सामनेही गाती थी किंतु अकबर के काल से इसमें परिवर्तन हुवा।

८. **मंगल इस्तक एवं जयतिश्री:** आचार्योंने कुछ राग मंगलोत्सव एवं विवाह आदि के लिये रख दिये। इन शैलीयों का नामकरण राग मंगल इस्तक एवं जयतिश्री के नामपर ही कर दिया गया। इस प्रकार के गाने विवाह के अवसर पर मनोरंजनके लिये गाये जाते है।

९. **मानकाल:** यह एक राग का नाम है। यह जौनपूर में गाया जाता था। इसकी रचना सभी देशी भाषाओं में कि जाती थी। इसमें चरणों की संख्या निश्चित नही होती। गुरु शिष्य इसको एक के बाद एक गाते है।

१०. **छंद:** फकीरुल्ला के अनुसार यह शैली लाहौर के क्षेत्र में अधिक प्रचलित थी। शेख बहाउदिन जकरिया ने फारसी में छंद का नाम जहंद रख दिया। इस शैली में बहाउदिन जकरिया गाते गाते कई प्रकार प्रस्तुत करते थे। यह पंजाब में गाया जाता था। इसमें प्रेम कहानियाँ, अपनी दीनता तथा परमात्मा की स्तुती की जाती थी।

११. **कडखा:** कडखा रणक्षेत्र में गाया जाता था। राजस्थानी भाषामें इसमें चार से आठ बोल होते थे। इसमें युध्द तथा योध्दाओं के साहस का वर्णन किया जाता था। कभी कभी राजाओं की प्रशंसा भी इसमें करते थे। किंतु अकबर के काल में यह ध्रुपद में गाया जाने लगा।

१२. कल्ली:- इस शैली का प्रचार सिंध में था। इसमें स्त्रीयों व्दारा प्रेमगीत गाये जाते थे। ऐसा विश्वास किया जाता है, की इसका प्रयोग जादूटोना के लिये किया जाता था।

१३. लाचारी: इस गीत को बिहार प्रांत में तिरहुत नामक स्थान पर गाया जाता था। इसमें प्रेम की तपन दिखाई देती है। आजभी बिहार एवं उत्तर प्रदेश के कुछ जगह यह गाई जाती है।

१४. गुजरी:- यह गुजरात में गाया जाता था। इसमें युध्द तथा राजा का यशोगान किया जाता था।

१५. जकरी: इस गीत शैली का आविष्कार काजी मोहम्मद गुजराती ने किया था। यह शैली कुछही पंक्तिया और तुको पर आधारित होती थी। जकरी गुजरात में मुसलमानों में अधिक प्रचलित थी। ये गीत प्रेम और उत्तेजना से पूर्ण होते थे।

१६. चुटकूला: मानसिंह और मानकुतूहल में हरिहर निवास व्दिवेदी ने जौनपूर के सुलतान हुसैन शर्की को चुटकूला का आविष्कारक बताया है। इसके चार चरण होते थे – स्थाई, अंतरा, संचारी, अभोग. इसमें प्रेम की चर्चा और वियोग का क्रंदन होता था।

१७. विगाद: इस शैली में राजपूतानी भाषा का प्रयोग किया जाता है। इसमें योध्दाओं की विरता और साहस का वर्णन होता है।

१८. बार:- कई लोग इसे बाद भी कहते है। यह चरनी भाषा में गाया जाता है। इसका गायन केवल ढाडी जाती के लोगों में ही प्रचलित है। इसमें युध्द शैलीका वर्णन होता था।

१९. बाललीला: नव शिशु के जन्म के समय जो राग गाया जाता है, उसे बाल लीला कहते है। इसमें ख्याल के भाँती दो पंक्तियाँ होती है। शिशु चिरंजीव हो तथा उसे भावी जीवन में गौरव एवं यश प्राप्त हो, ऐसा आशिर्वाद दिया जाता है।

२०. सूरज प्रकाश: राजा गुलाम ने मूलत: इसका संबंध ब्रह्मा और सामवेद से बताया है। इसमें राजाओं के गुणगान और देवताओं की स्तुती कि जाती है। इसमें छंद, स्वर तथा तान का प्रयोग किया जाता है। इसका साहित्य उच्च स्तर का होता है। सरगम और आकार दोनो का प्रयोग किया जाता है। सूर्य के बाराह कलाओं का वर्णन किया जाता है।

२१. चंद्रप्रकाश: चंद्र प्रकाश में मुलत: चंद्र के 16 कलाओं का वर्णन किया जाता है। ऐसा कहा जाता है, की इसका गायन एक प्रहरमें ही समाप्त करना होता है।

मुगल काल की यह गायन शैलीयाँ स्थूल रुप से निम्नलिखीत वर्गोंमें विभाजित की जाती है।

१. **श्रृंगारपरक शैलीयाँ:** कव्वाली, गजल, चुटकुला, कल्ली

२. **वीर रसात्मक शैलीयाँ:** कडखा, गुजरी, बिगाद बार, चुटकुला

३. **भक्तिपर शैलियाँ:** कौल, कव्वाली, कल्बाना

४. **प्रकृतिमूलक शैलियाँ:** नख्श गुल, निगार

५. **षोडशोपचारात्मक शैलियाँ (जन्म मृत्यु, विवाह प्रसंग):** सोहेला, मंगल इस्तक, जयतिश्री

उक्त गौण शैलियों का उल्लेख मानसिंह, मानकुतूहल, हिंदुस्थानी म्युझिक, आईने अकबरी आदि ग्रंथों में किया गया है। किंतु आज की स्थिती में यह शैलियाँ प्रचलित ना होने के कारण महफिल में गाई नही जाती और सामान्य संगीत प्रेमीयों को वे ज्ञात नही है।

अत: ठुमरी, दादरा, ख्याल, टप्पा, झुला, सावनी, ध्रुपद, धमार आदि प्रचलित शैलियों के साथ इन शैलियों की कमसे कम जानकारी होना प्रत्येक कलाकार और सामान्य संगीत प्रेमीके लिये उपयुक्त साबित हो सकता है।

संदर्भ सूची

१. रागदर्पण – फकिरुल्लाह
२. आइने अकबरी
३. मानसिंह और मानकुतूहल
४. हिंदुस्थानी म्युझिक – नजमा परवीन अहमद
५. उसुलन नगमाते आसफी – रजा गुलाम
६. मुसलमान और भारतीय संगीत – आचार्य ब्रहस्पती
७. मृत्युंजय शर्मा – संगीत मॅन्युअल
८. पं. भगवत शरण – संगीत निबंध मंजिरी